

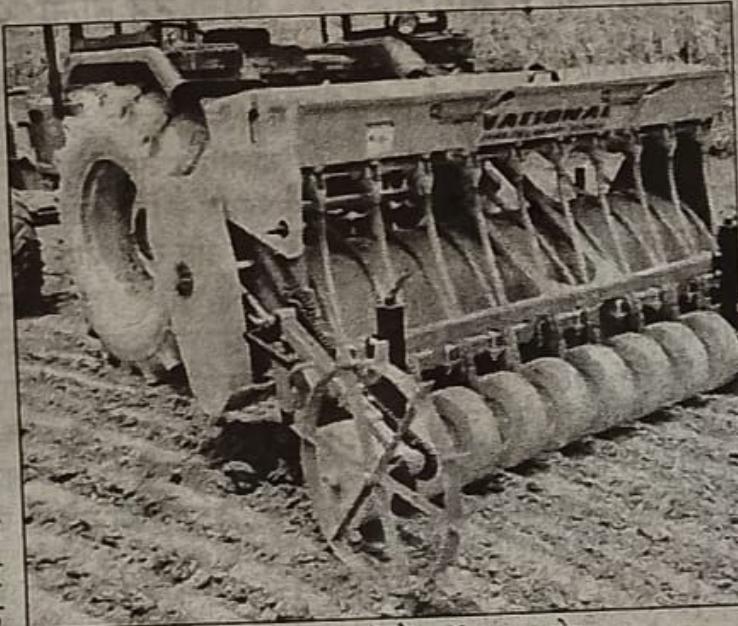
## फसल अवशेषों को न जलायें, जुताई कर सड़ा दें

□ पांच कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना जारी

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 4 जून। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के सफल संचालन हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर एवं इटावा को स्वीकृति प्रदान की गई है। निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉ ए के

सिंह ने बताया कि पूर्व में यह योजना कृषि विज्ञान केंद्र लखीमपुर खीरी, हरदोई एवं रायबरेली में संचालित की जा रही है जबकि वर्तमान में 2 केंद्रों के लिए और स्वीकृति हुई है उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के अंतर्गत अब पांच कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना कार्य करेगी। उन्होंने बताया कि पूर्व में यह योजना के संचालन से पुआल जलाने



वाले केस नगण्य रहे हैं। डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि यह परियोजना अटारी जोन 3 के निदेशक डॉ अतर सिंह के अथक प्रयासों के फल स्वरूप विश्वविद्यालय को प्राप्त हुई है। फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ पीके राठी ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा चयनित कृषि विज्ञान केंद्र जैसे लखीमपुर खीरी, रायबरेली एवं हरदोई दलीप

नगर एवं इटावा में फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर, सुपर सीडर, पैडी स्ट्र, सीड ड्रिल, मोल्ड बोर्ड प्लाउ, ट्रैक्टर ट्राली आदि कृषि यंत्र केंद्रों को उपलब्ध कराए गए हैं। एवं समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों को निर्देशित किया गया है कि सभी केंद्र प्रशिक्षण, दीवाल लेखन एवं प्रसार साहित्य के माध्यम से फसल अवशेषों को न जलाने के लिए अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करें। जिससे किसान भाई फसल अवशेषों को मिट्टी में कृषि यंत्रों की सहायता से जुदाई का सड़ा गला दे, जिससे मूदा की उर्वरा शक्ति अज्ञी होगी और गुणवत्ता युक्त फसल प्राप्त होगी। साथ ही पर्यावरण प्रदूषण भी कम हो।

# राष्ट्रीय सहारा-

hastkshep.rsaahara@gmail.com

कानपुर। शनिवार ● 5 जून ● 2021

## फसल अवशेष न जलाकर कंपोस्ट खाद बनाएं किसान

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने किसानों को फसल अवशेषों को खेतों में ना जलाकर कंपोस्ट खाद बनाने की सलाह दी है। उन्होंने कहा है कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में बढ़ जाती है और इसका मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ा है। मृदा में उत्पन्न फसलों के लिए लाभकारी सूखम् जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। इस कारण पौधों को पोषक तत्व प्राप्त नहीं होते और फसल उत्पादन में गिरावट आती है।

डॉ. खलील खान ने किसानों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। फसलों के अवशेषों को खेत में जलाने से उनकी जड़, तना और पत्तों आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त वातावरण प्रभावित होने के साथ ही पशुओं के चरे के लिए भी व्यवस्था करने में समस्या आती है। अवशेषों को जलाने के कारण होने वाले वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की धातुक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है। गर्मियों में इससे आग लगने की सभावनाएं भी बनी रहती हैं।

उन्होंने बताया कि किसान फसल अवशेषों का ठचित प्रबंधन करें। कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों में प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही वातावरण को स्वच्छ बनाने में योगदान करें। एक सर्वेक्षण का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश



डॉ. खलील खान।



जलाने कृषि अवशेष।

बढ़ होगी तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा। भूमि की जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में भी बढ़ होगी। फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं व जलवाय्य उत्सर्जन भी कम होता है। सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है।

डॉ. खान का कहना है कि यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है। उन्होंने किसानों के लिए कहा है कि वे फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के साथ ही वातावरण को स्वच्छ बनाने में योगदान करें। एक सर्वेक्षण का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश

में गेहूं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है।

उन्होंने कहा कि किसान गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आधुनिक कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें। इससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करने से 8 से 10 दिन में वह अवश्य सड़ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी। जीमीन को सारे पोषक तत्व मिलेंगे और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होगी।

सीएसए मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान की सलाह

### कृषि वित्ती की फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना को विस्तार

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से संचालित फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना को और विस्तार मिला है। अभी तक यह योजना कृषि विज्ञान केंद्र लखीमपुर खीरी, हरदोई व रायबरेली में संचालित की जा रही थी। दो और केंद्रों के लिए इसके लिए स्वीकृति प्राप्त हुई है। संबंधित योजना के लिए स्वीकृत दो नए कृषि विज्ञान केंद्रों में कानपुर देहत स्थित दलीप नगर व इटावा शामिल हैं।

निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉ. एके सिंह ने बताया कि विश्वविद्यालय के अधीन अब पांच कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना कार्य करेगी। उन्होंने बताया कि इस परियोजना से संबंधित केंद्रों में किसान जागरूक हुए हैं और पुआल जलाने के मामले नाप्य हो गए हैं। उन्होंने कहा कि परियोजना के विस्तार को स्वीकृति अटरी जोन 3 कानपुर के निदेशक डॉ. अतर सिंह के प्रयासों से मिली है।

फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ. पीके राठी ने बताया कि समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों को निर्देशित किया गया है कि सभी केंद्र प्रशिक्षण, दीवार लेखन एवं प्रसार आदि के माध्यम से किसानों को फसल अवशेषों को ना जलाने के लिए जागरूक करें।



लालनक्क संस्करण

नं-05, अंक -220  
तानिकार, 05 जून, 2021

पृष्ठ 12

मूल्य 3 रुपये

लालनक्क, लीला, इंडोर और विस्तरात्मक में प्रकाशित

For epaper → [www.updainikbhaskar.com](http://www.updainikbhaskar.com)

देश का उत्तर संस्कृतीय अख्यार

# दैनिक भारत



06 जून

## विश्वविद्यालय के पांच कृषि विज्ञान केंद्रों पर 'फसल अवशेष प्रबंधन योजना' कार्य करेगी

बोर्डर न्यूज़

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के सफल संचालन हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र दिल्लीप नगर एवं इटावा को स्वीकृति प्रदान की गई है। निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि पूर्व में यह योजना कृषि विज्ञान केंद्र लखीमपुर खीरी, हरदोई एवं रायबरेली में संचालित की जा रही है जबकि वर्तमान में 2 केंद्रों के लिए और स्वीकृति हुई है उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के अंतर्गत अब पांच कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना कार्य करेगी। उन्होंने

**□ फसल अवशेषों को न जलाने के लिए अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करें**



बताया कि पूर्व में यह योजना के संचालन से पुआल जलाने वाले केस नगण्य रहे हैं। डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि यह परियोजना अटारी जौन 3 के निदेशक डॉ अतर सिंह के अथक प्रयासों के फल स्वरूप विश्वविद्यालय को प्राप्त हुई है।

फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ पीके राठी ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा चयनित कृषि विज्ञान केंद्र जैसे लखीमपुर खीरी, रायबरेली एवं हरदोई दलीप नगर एवं इटावा में फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर, सुपर सीडर, पैडी स्ट्रा, सीड डिल, मोल्ड बोर्ड प्लाट, ट्रैक्टर ट्राली आदि कृषि यंत्र केंद्रों को उपलब्ध कराए गए हैं। एवं समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों को निर्देशित किया गया है कि सभी केंद्र प्रशिक्षण, दीवाल लेखन एवं प्रसार साहित्य के माध्यम से फसल अवशेषों को न जलाने के लिए अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करें। जिससे किसान भाई फसल अवशेषों को मिट्टी में कृषि यंत्रों की सहायता से जुदाई का सड़ा गला दे। जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति अच्छी होगी।



हिन्दी दैनिक

R.N.I.No-UAPHIN/2012/42725

# हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

● नंबर : 10

● अंक 48

● कानपुर, शनिवार 5 जून 2021

● मुक्त : 8

● मूल्य: 1.00 रु.

## विश्वविद्यालय के पांच कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना कार्य करेगी

कानपुर-(हिन्दुस्तान का इतिहास)- चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के सफल संचालन हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिली द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर एवं इटावा को स्वीकृति प्रदान की गई है। निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि पूर्व में यह योजना कृषि विज्ञान केंद्र लखीमपुर खीरी, हरदोई एवं रायबरेली में संचालित की जा रही है जबकि वर्तमान में 2 केंद्रों के लिए और स्वीकृति हुई है उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के अंतर्गत अब पांच कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना कार्य करेगी उन्होंने बताया कि पूर्व में

यह योजना के संचालन से पुआल जलाने वाले केस नगण्य रहे हैं डॉ० ए के सिंह ने बताया कि यह परियोजना अटारी जौन ३ के निदेशक डॉ० अतर सिंह के अधक प्रयासों के फल



स्वरूप विश्वविद्यालय को प्राप्त हुई हैं फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ० पीके राठी ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा चयनित कृषि विज्ञान केंद्र जैसे लखीमपुर खीरी, रायबरेली एवं हरदोई दिलीप नगर एवं इटावा में फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर, सुपर सीडर, पैडी स्ट्रा, सीड ड्रिल, मोल्ड बोर्ड लाइ, ट्रैक्टर ट्राली आदि कृषि यंत्र केंद्रों को उपलब्ध कराए गए हैं एवं समस्त

कृषि विज्ञान केंद्रों को निर्देशित किया गया है कि सभी केंद्र प्रशिक्षण, दीवाल लेखन एवं प्रसार साहित्य के माध्यम से फसल अवशेषों को न जलाने के लिए अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करें जिससे किसान भाई फसल अवशेषों को मिट्टी में कृषि यंत्रों की सहायता से जुदाई का सङ्ग गला दे जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति अच्छी होगी और गुणवत्ता युक्त फसल प्राप्त हो तथा पर्यावरण प्रदूषण भी कम हो।

# किसान सीखेंगे फसल अवशेष से खाद बनाना

संवाद न्यूज एजेंसी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर (कानपुर देहात) और इटावा में फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के सफल संचालन के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली ने स्वीकृति दे दी है। अब यहां पर किसानों को फसल अवशेष को जलाने के बजाय खाद बनाना सिखाया जाएगा।

निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉ. एके सिंह ने बताया कि अभी यह योजना कृषि विज्ञान केंद्र लखीमपुर खीरी, हरदोई और रायबरेली में संचालित की जा रही है। अब

सीएसए के दो और केवीके में चलेगी फसल अवशेष प्रबंधन योजना

विश्वविद्यालय के अंतर्गत कुल केंद्रों पर योजना कार्य करेगी।

फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ. पीके राठी ने बताया कि चयनित कृषि विज्ञान केंद्रों पर आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर, सुपर सीडर, पैडी स्ट्रा, सीड ड्रिल आदि उपलब्ध कराए गए हैं। केंद्र प्रभारी भी फसल अवशेषों को न जलाने के लिए प्रचार प्रसार करेंगे। साथ ही किसानों को बताएंगे कि कैसे वे फसल अवशेषों को मिट्टी में कृषि यंत्रों की सहायता से जुताई कर सड़ा गला सकते हैं।

# **आज पर्यावरण दिवस पर वेबिनोर से जुड़ें किसान व छात्र- कुलपति**

**05/06/2021**

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित अनौगी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ वीके कनौजिया ने बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिनांक: 05 जून, 2021 को 11रु30 से 12रु30 बजे तक ऑनलाइन वेबिनार आयोजित किया जा रहा है। मुख्य उद्देश्य पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करना तथा पर्यावरण संरक्षण तथा विकास के प्रति भावना जागृत करना है। उन्होंने बताया कि इस ऑनलाइन वेबनार में वैज्ञानिक, शिक्षक, पर्यावरणविद, एवं किसान तथा छात्र प्रतिभाग करेंगे। डॉक्टर कनौजिया ने सभी सम्मानित किसान भाईयों, नव जवानों व छात्र – छात्राओं से अनुरोध है कि उपरोक्त मीटिंग में समय से ऑनलाइन प्रतिभाग करें। उन्होंने वेबनार से जुड़ने के लिए अपने फोन के प्ले स्टोर में जाकर गूगल मीट ऐप्प डाउनलोड कर ले, और ऊपर दिये गये लिंक से 11रु20 बजे तक लॉग इन कर लें जिससे आप सभी वेबिनार से जुड़ सकें।

**News Expert Facebook पर है.** News Expert से कनेक्ट होने के लिए Facebook से जुड़ें.

शामिल हों

या

लॉग इन करें



**News Expert**

9 घंटे · Facebook for Android ·

फसल अवशेषों को न जलाने के लिए किया प्रचार प्रसार कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के सफल संचालन हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र दिल्लीप नगर एवं इटावा को स्वीकृति प्रदान की गई है। निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि पूर्व में यह योजना कृषि विज्ञान केंद्र लखीमपुर खीरी, हरदोई एवं रायबरेली में संचालित की जा रही है जबकि वर्तमान में 2 केंद्रों के लिए और स्वीकृति हुई है उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के अंतर्गत अब पांच कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना कार्य करेगी। उन्होंने बताया कि पूर्व में यह योजना के संचालन से पुआल जलाने वाले केस नगण्य रहे हैं। डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि यह परियोजना अटारी जौन 3 के निदेशक डॉ अतर सिंह के अथक प्रयासों के फल स्वरूप विश्वविद्यालय को प्राप्त हुई है। फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ पीके राठी ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा चयनित कृषि विज्ञान केंद्र जैसे लखीमपुर खीरी, रायबरेली एवं हरदोई दिल्लीप नगर एवं इटावा में फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर, सुपर सीडर, पैडी स्ट्रा, सीड ड्रिल, मोल्ड बोर्ड प्लाउ, ड्रैक्टर ट्राली आदि कृषि यंत्र केंद्रों को उपलब्ध कराए गए हैं। एवं समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों को निर्देशित किया गया है कि सभी केंद्र प्रशिक्षण, दीवाल लेखन एवं प्रसार साहित्य के माध्यम से फसल अवशेषों को न जलाने के लिए अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करें। जिससे किसान भाई फसल अवशेषों को मिट्टी में कृषि यंत्रों की सहायता से जुदाई का सड़ा गला दे। जिससे मुदा की उर्वरा शक्ति अच्छी होगी। और गुणवत्ता युक्त फसल प्राप्त हो। तथा पर्यावरण प्रदूषण भी कम हो। (डॉ खलील खान), मीडिया प्रभारी, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर।



# फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना संचालन हेतु सीएसए के केवीके दिलीपनगर और इटावा का घण्टा

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

05/06/2021

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के सफल संचालन हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर एवं इटावा को स्वीकृति प्रदान की गई है। निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि पूर्व में यह योजना कृषि विज्ञान केंद्र लखीमपुर खीरी, हरदोई एवं रायबरेली में संचालित की जा रही है जबकि वर्तमान में 2 केंद्रों के लिए और स्वीकृति हुई है उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के अंतर्गत अब पांच कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना कार्य करेगी। उन्होंने बताया कि पूर्व में यह योजना के संचालन से पुआल जलाने वाले केस नगण्य रहे हैं। डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि यह परियोजना अटारी जोन 3 के निदेशक डॉ अतर सिंह के अथक प्रयासों के फल स्वरूप विश्वविद्यालय को प्राप्त हुई हैं। फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ पीके राठी ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा चयनित कृषि विज्ञान केंद्र जैसे लखीमपुर खीरी, रायबरेली एवं हरदोई दलीप नगर एवं इटावा में फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्वर, सुपर सीडर, पैडी स्ट्रा, सीड ड्रिल, मोल्ड बोर्ड प्लाउ, ट्रैक्टर ट्राली आदि कृषि यंत्र केंद्रों को उपलब्ध कराए गए हैं। एवं समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों को निर्देशित किया गया है कि सभी केंद्र प्रशिक्षण, दीवाल लेखन एवं प्रसार साहित्य के माध्यम से फसल अवशेषों को न जलाने के लिए अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करें। जिससे किसान भाई फसल अवशेषों को मिट्टी में कृषि यंत्रों की सहायता से जुदाई का सड़ा गला दे। जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति अच्छी होगी। और गुणवत्ता युक्त फसल प्राप्त हो। तथा पर्यावरण प्रदूषण भी कम हो।

# भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर व इटावा को स्वीकृति

**05/06/2021**

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्रों पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना के सफल संचालन के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर एवं इटावा को स्वीकृति मिल गई है। निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉ.ए.के. सिंह ने बताया कि पूर्व में यह योजना कृषि विज्ञान केंद्र लखीमपुर खीरी, हरदोई एवं रायबरेली में संचालित की जा रही है जबकि वर्तमान में 2 केंद्रों के लिए और स्वीकृति हुई है उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के अंतर्गत अब पांच कृषि विज्ञान केंद्रों पर



फसल अवशेष प्रबंधन योजना कार्य करेगी। फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ.पी.के.राठी ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा चयनित कृषि विज्ञान केंद्रों जैसे लखीमपुर खीरी, रायबरेली एवं हरदोई दलीप नगर एवं इटावा में फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर, सुपर सीडर, पैडी स्ट्रा, सीड ड्रिल, मोल्ड बोर्ड प्लाउ, ट्रैक्टर ट्राली आदि उपलब्ध कराए गए हैं। सभी कृषि विज्ञान केंद्रों को फसल अवशेषों को ना जलाने का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार प्रशिक्षण, दीवार लेखन एवं प्रसार साहित्य के माध्यम से करने के लिए निर्देशित किया गया है जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ने से गुणवत्ता युक्त फसल प्राप्त हो और पर्यावरण प्रदूषण भी कम हो।